वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका

तृतीय अंक; जनवरी से दिसम्बर -2022

मरुधरा

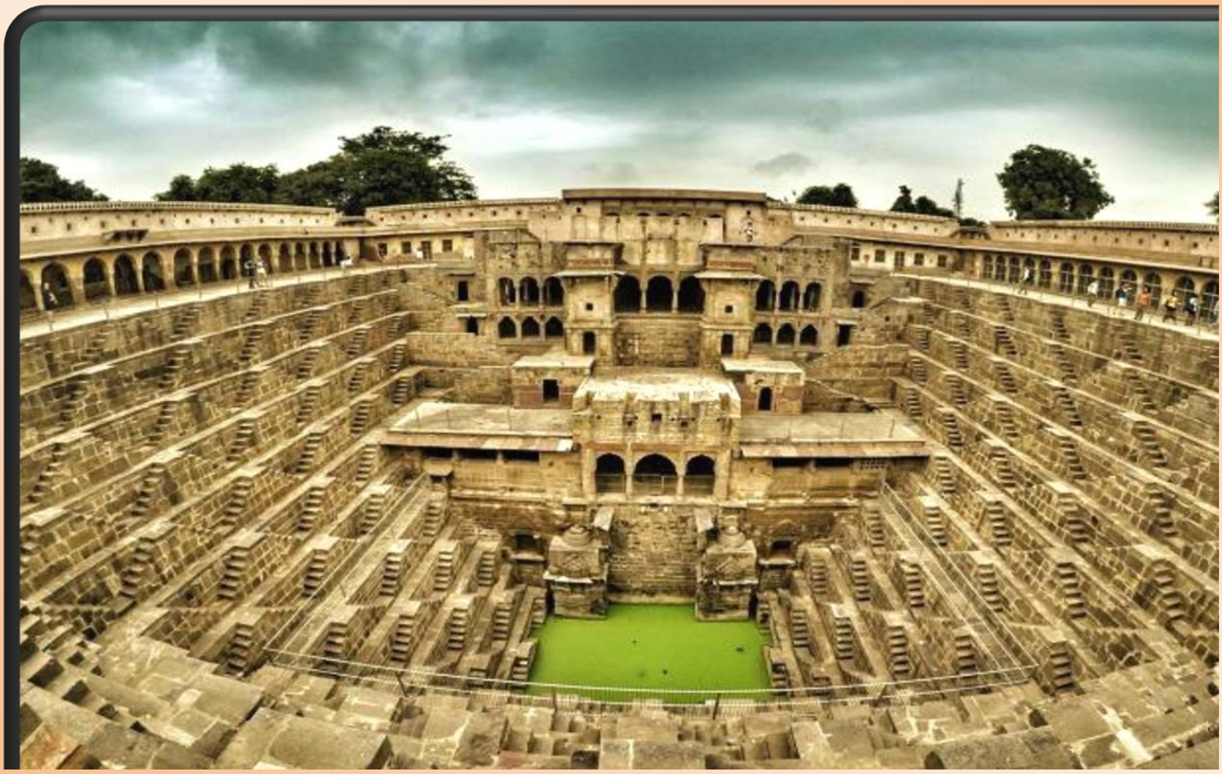

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

कार्यालय द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा - 2022 के कार्यक्रमों की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़ा
समारोह-2022
हिन्दी दिवस समारोह

हिन्दी पखवाड़ा
समारोह-2022
चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह के विभिन्न आयोजन
हिन्दी दिवस समारोह

हिन्दी पखवाड़ा
समारोह-2022
चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह के विभिन्न आयोजन
हिन्दी दिवस समारोह

हिन्दी पखवाड़ा
समारोह-2022
हिन्दी दिवस समारोह
14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2022
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

हिन्दी पखवाड़ा
समारोह-2022
हिन्दी दिवस समारोह
14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2022

'मरूधरा' परिवार

संरक्षक- श्रीमती अर्चना गुर्जर, महालेखाकार

परामर्शदाता – श्री संजीव कुमार सुराना, उप-महालेखाकार

प्रधान संपादक

श्री बलबीर सिंह, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

सह-संपादक

श्री अशोक कुमार यादव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री अभिराज सिंह, सहायक पर्यवेक्षक

श्री रमेश कुमार गुप्ता, वरि. लेखापरीक्षक

श्रीमती मीनाक्षी पाठक, वरि. लेखापरीक्षक

श्री अजित सिंह, क. अनुवादक

श्री शंकर लाल सीमावत, क. अनुवादक

टिप्पणी- संपादक मंडल को पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त रचनाकारों के विचार से सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाकार स्वयं अपनी रचनाओं की मौलिकता के लिए उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

क्रम	रचना का नाम	लेखक	पृष्ठ
01	राजभाषा नियम, 1976	- - - - - - - - - - - - -	01
02	नारी तुम देवी नही, मानवी बनो	सुश्री याशिका गोयल	02
03	ओ३म्	श्री ओम प्रकाश गुप्ता	03
04	गीत: महाप्रलय तो होगी ही	श्री रवि शंकर विजय	04
05	कौन हरे अब पीर सखी मेरी कौन हरे अब पीर	श्रीमती भावना शर्मा	05
06	पांच वर्षीय डाकघर आवर्ती जमा खाता	श्रीमती शिवपाली खंडेलवाल	06
07	राजस्थान की जल संचय परंपरा और वर्तमान प्रासंगिकता	श्री कुलदीप सिंह शेखावत	07-08
08	जिंदगी	श्रीमती नीलम मीणा	09-10
09	आओ! मानसिक स्वास्थ्य जीना सीखें	श्री शंकर लाल सीमावत	11-13
10	आयकर अधिनियम के ब्याज/दण्ड सम्बंधित प्रावधान	श्री सत्येन्द्र कौशिक	14-16
11	मन के जीते जीत है	श्री अमित गोयल	17
12	कहना नहीं करके दिखाना है	सुश्री सुमित्रा	18-19
13	तुम स्त्री हो	श्री सुरेंद्र चतुर्वेदी	20
14	स्वस्थ्य जीवन का खजाना, बागवानी का जमाना	श्रीमती सुमन शर्मा	21-24
15	चाहत	श्रीमती रूचि गुप्ता	25
16	समाज की रस्में	श्री अशोक कुमार वर्मा	26-27
17	ग्लोबल वॉर्मिंग	श्री राम नारायण	28-30
18	कार्यालय में हिंदी सम्बन्धित कार्यों का विवरण	राजभाषा अनुभाग	31
19	कार्यालय की पत्रिका "मरूधरा" हेतु पाठकों के अभिमत	- - - - - - - - - - - - -	32-33
20	हिन्दी पखवाड़ा - 2022 को आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता	- - - - - - - - - - - - -	34-36
21	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम	- - - - - - - - - - - - -	42-44
22	कार्यालय उपयोग हेतु द्विभाषी शब्दावली संग्रह	- - - - - - - - - - - - -	45

संरक्षक की कलम से

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "**मरूधरा**" का तृतीय अंक **(जनवरी से दिसम्बर-2022)** सभी विद्वान पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है, जो हम सभी के लिए एक अनुपम एवं असीम प्रसन्नता का विषय है।

प्रस्तुत अंक में हमारा प्रयास रहा है कि यह (ई-पत्रिका) हमारे कार्यालय की कार्य संस्कृति का प्रतिनिधित्व करे, विभिन्न गति-विधियों के बारे में जानकारी प्रदान करे तथा हिन्दी में कामकाज को बढ़ावा देने के साथ-साथ सृजनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहन प्रदान करके राजभाषा के विकास में सहायक बने। यह हमारा दृढ़-विश्वास है कि विभिन्न आलेखों, कविताओं, हिन्दी पखवाड़ा की गतिविधियों, लेखापरीक्षा कार्य में सहायक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री तथा राजस्थान की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के रंग-बिरंगे आकर्षक छायाचित्रों के संकलन को पाठकों का प्रेम एवं सहयोग प्राप्त होगा। पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में सृजनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किये जाने का प्रयास किया गया है। हमारा विनम्र विश्वास है की "मरूधरा" के प्रकाशन से सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति समस्त कार्मिकों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा।

इसके साथ ही, मैं पाठकवृन्द से अनुरोध करती हूँ कि वे पत्रिका की समीक्षा कर अपने बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत करावें जिससे हम आगामी अंक को और उपयोगी एवं रूचिकर बना सकें।

अर्चना गुर्जर
(महालेखाकार)

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है

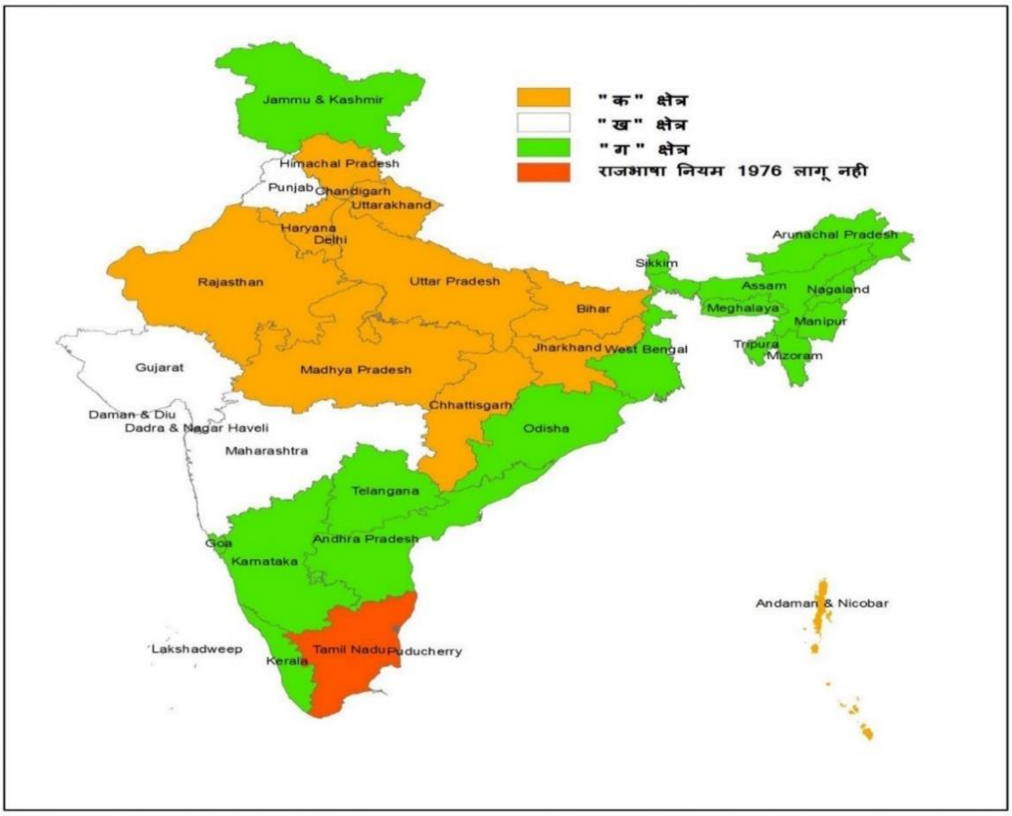

1

भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ राज्य
'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य हैं
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य
'ग'	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य

2

नारी तुम देवी नही, मानवी बनो

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता

यह भारतीय नारी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन है। नारायण के साथ लक्ष्मी, शिव के साथ भवानी, राम के संग सीता और कृष्ण के साथ राधा की आराधना नारी शक्ति की ही अर्चना है। नारी ने समाज के प्रति पूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया है परंतु फिर भी सदियों से नारी शोषण की शिकार रही है।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गदपि गरीयसी

नारी का जननी स्वरूप उसे त्याग, क्षमा सहनशीलता, सहानुभूमि, दया, ममता, प्रेम की मूर्ति बनाता है। नारी बिना शिकायत किये समस्त कष्टों, आपदाओं व संकटों का मुकाबला करती है। परंतु यह भी सच है कि सदियों से नारी शोषण की शिकार भी हुई है। नारी ने हमेशा से सबको क्षमा किया है जिसके चलते उसकी कोमलता व क्षमाशीलता को दुर्भाग्यवश दुर्बलता समझ लिया गया है।

नरकृत शास्त्रों के बंधन सब है नारी ही को लेकर
अपने लिये सभी सुविधायें, पहले ही कर बैठे नर

भारतीय नारी के शोषण की वेदना का हम राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियों से भी समझ सकते है:-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल मे है दूध और और आंखों मे पानी

नारी हर स्वरूप में शोषण की शिकार रही है। चिंताजनक बात तो यह है कि आज नारी ही नारी का शोषण कर रही है। कभी वह सास के रूप में बहू पर अत्याचार कर रही है, और कभी बहू के रूप में सास को घर से बाहर निकाल रही है। पति अगर पत्नी को नहीं चाहता तो तलाक लेकर उसे घर से बाहर निकाल देता है और यदि ससुराल में नारी का सम्मान नहीं होता है तो पीहर से भी एक मुट्ठी अन्न की आकांक्षा नहीं कर सकती। नारी पर आजीवन पहरा बड़े ही कलात्मक ढंग से दिया जाता है। बचपन में पिता उसकी चौकसी करे, युवावस्था में पति पहरा करे तथा वृद्धावस्था में पुत्र उस पर नजर रखे। मानो वह जन्मजात ही अपराधिनी हो।

आज नारी को जागरूक बनकर शोषण दूर करने हेतु मानवी स्वरूप अपनाना होगा व देवी स्वरूप छोड़ना होगा। महादेवी वर्मा ने कहा है कि वर्तमान युग नारी की शक्ति के न जानने की करूण की कहानी है। नारी को अपनी शक्ति का परिचय दे कर समाजकंटकों के दांत खट्टे करने चाहिये ना कि भीगी बिल्ली बनकर समाजकंटकों को बढ़ावा देना है।

नारी को मानवी स्वरूप अपनाना ही होगा और यह ही उसकी समस्त समस्याओं का समाधान है।

याशिका गोयल, अथिति रचनाकार

ओ३म्

!!कुछ ना कहो!!

कुछ भी ना कहो,
जमाने से कुछ ना कहो,
जमाना किसी की सुनता नहीं।
जमाने की क्या मानव तो
अपनी भी नहीं सुनता है ।
साधु, संत और गुरुओं को
जिसने नहीं सुना,
भगवान श्री राम और श्री कृष्ण
को जिसने नहीं सुना,
उस जमाने से अब क्या कहना है।
जमाना तो कार्य और
प्रगति को देखता है ।
जमाना तो नकल करता है ।
जलता है जमाना किसी की
प्रगति से।
जमाने को अब ना समझाओ,
ना ही कुछ सुनाओ।
समझाना, सुनाना ही चाहो,
तो स्वयं को ही समझा लो,
सुना लो खुद को ही।
क्योंकि जमाना कभी सुनता नहीं। कुछ भी ना कहो,
जमाने से कुछ भी ना कहो।
कुछ ना कहो किसी से,
कुछ ना कहो,
कुछ ना सुनाओ,
किसी को कुछ भी ना सुना हो।
ओ३म्

ओम प्रकाश गुप्ता, अतिथि रचनाकार

गीत: महाप्रलय तो होगी ही

खूब लुटाया प्यार धरा ने, मां सहृदय तो होगी ही।
पर गणिकों की है भविष्यवाणी सच साबित तो होगी ही।।
महाप्रलय तो होगी ही ।।

खत्म हुआ है धर्म धरा से, सर्वत अधर्म फैला हुआ
शुभ रजत मां का आंचल, भी देखो मैला हुआ
अब भू तल में प्लेटें खिसक रही, महाप्रलय तो होगी ही।

राजनीति की आड में, कितना बढ़ गया भ्रष्टाचार
शिष्टाचार तो कम हुआ, बढ़ गया अब दुराचार
रोक सके ना हम इसको, महाप्रलय तो होगी ही।

प्रकृति की अनुपम छटा में भी लगने लगे अब दाग हैं
संकुचित हुई इंसानी फितरत, हर दिल में आब आरग है
अति हो गई अब तो यारों, महाप्रलय तो होगी ही।

बढ़ती जनसंख्या घटते वन, जरूरत ज्यादा छोटा मन,
प्रकृति पर अधिकार जता कर, धरा का करें अनुचित दोहन,
फरते बादल कर रहे इशारा, महाप्रलय तो होगी ही।

सबको पता है खुदा के घर देर है अंधेर नहीं
बोओगें गर फूल आक के, मिले कभी फिर बेर नहीं
बोझ बढ़ा पापों का फिर तो महाप्रलय तो होगी ही।

रवि शंकर विजय, सहायक पर्यवेक्षक

कौन हरे अब पीर सखी मेरी कौन हरे अब पीर

कौन हरे अब पीर सखी मेरी कौन हरे अब पीर
अंखियन बरसे नीर सखी मेरी कौन हरे अब पीर

श्याम बिना दिन ऐसे बीते
जैसे जुग रहे बीत
जाने कहा गयो मोहे बिसर के
भूल गयो मोरी प्रीत
कैसे धरु मैं धीर सखी मेरी कौन हरे अब पीर

बिरहन सी फिरू कुंज गलिन में
जोगन भेष बनायो
वृक्षं से पूछो, गैयन से पूछ्यो
तेरो पतों नहीं पायो
छल गयो मोहे अहीर सखी मेरी कौन हरे अब पीर

यमुना तट भी सूनो पड्यो है
पनघट भयो वीरान
कौन नचावे, रास रचावे
कौन सुनाये तान
अब कौन चुरावे चीर सखी मेरी कौन हरे अब पीर

सखिया दरस बिन तरस रही है
तुझ बिन सुध-बुध हारी
होली भी फीकी, रंग भी फीके
काय दर्द दियो भारी
अब कौन उडावे अबीर सखी मेरी कौन हरे अब पीर

अंखियन बरसे नीर सखी मेरी कौन हरे अब पीर
कौन हरे अब पीर सखी मेरी कौन हरे सब पीर

भावना शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पांच वर्षीय डाकघर आवर्ती जमा खाता

01. पात्रता: निम्न व्यक्ति आवर्ती जमा खाता खोल सकते है।

1. एकल व्यक्ति;
2. संयुक्त (3 वयस्क) (संयुक्त ए अथवा संयुक्त बी)
3. नाबालिग की ओर से एक अभिभावक
4. 10 साल से अधिक का व्यक्ति अपने नाम पर

02. जमा की विधि:

01. खाता नकद अथवा चेक द्वारा खोला जा सकता है, चेक जमा की तिथि खाता खोलने की तिथि मानी जायेगी।
02. खाता यदि माह के प्रथम पखवाड़ा में खोला गया है, तो आगामी किश्तें भी प्रत्येक माह के प्रथम पखवाड़ा में ही जमा कराई जायेगी।
03. खाता न्यूनतम 100 के गुणक में खोला जा सकता है।
04. यदि माह के निर्धारित दिवस तक जमा नहीं किया जाता है, तो प्रत्येक डिफ़ॉल्ट माह के अनुसार डिफ़ॉल्ट शुल्क जमा कराना होता है।
05. लगातार 4 बकाया किश्तों के बाद खाता बंद हो जाता है तथा अग्रिम दो माह में जमा नही कराने पर खाता पूर्णतया बंद हो जाता है।
06. आवर्ती खाते में अग्रिम जमा की सुविधा भी उपलब्ध है। विभाग द्वारा न्यूनतम 6 माह की जमा पर छूट भी प्रदान की जाती है।
07. खाता खोलने के समय भी अग्रिम जमा किया जा सकता है। अधिकतम 5 वर्ष के लिए भी अग्रिम जमा की जा सकती है।

03. ऋण की सुविधा:

1. लगातार 12 किश्तें जमा करने के बाद खाताधारक ऋण लेने के लिए पात्र हो जाता है। ऋण जमा का 50 प्रतिशत तक उपलब्ध कराया जाता है।
2. ऋण एकमुश्त अथवा समान किश्तों में भी जमा कराया जा सकता है। ऋण पर ब्याज आर. डी. पर ब्याज +2% की दर से लागू होता है।
3. यदि परिपक्वता से पूर्व ऋण नहीं चुकाया जाता है तो अंतिम भुगतान में से ऋण और ब्याज की कटौती कर ली जाती है।

04. खाता बंद करने की विधि:

1. तीन वर्ष पूर्ण होने से पूर्व खाते को बंद नहीं कराया जा सकता है।
2. परिपक्वता से 1 दिवस पूर्व भी खाता बंद करवाने पर साधारण ब्याज ही देय होगा।
3. खाता कुल 60 माह के पश्चात परिपक्व होगा।
4. खाते को 5 वर्ष पूर्ण होने के पश्चात भी आगामी पांच वर्षों के लिए विस्तारित किया जा सकता है।
5. खाते को परिपक्ता की तारिख के पश्चात भी बिना जमा के 05 वर्ष तक जारी रखा जा सकता है।

शिवपाली खंडेलवाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

राजस्थान की जल संचय परंपरा और वर्तमान प्रासंगिकता

जल मानव जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है और मानव विकास की प्रक्रिया से सीधा जुडा हुआ है। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के परिणामस्वरूप मानव उपयोग हेतु पर्याप्त जल की अनुपलब्धता कमोबेश सम्पूर्ण विश्व मे व्याप्त है इसलिए पर्यावरणविदों द्वारा प्राय: आशंका व्यक्त की जाती है कि तृतीय विश्व युद्ध पानी के लिए ही लड़ा जायेगा। प्रदेश की अत्यंत विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण राजस्थान में यह समस्या हमेशा से विद्यमान रही है। नगण्य वर्षा और सदानीरा नदियों के अभाव के कारण राज्य का पश्चिमी भाग मरुस्थल है। इसके साथ ही, प्रदेश के अधिकांश भाग अर्ध शुष्क और शुष्क जलवायु युक्त होने से प्राकृतिक जल स्त्रोतों की कमी ने समस्या को और गंभीर बना दिया है। इस समस्या से लड़ने के लिए यहाँ के निवासियों ने कृत्रिम जल सरंक्षण प्रणालियों का आविष्कार कर जीवन को सहज बनाने का प्रयास किया।

राजस्थान में जल संचय की परंपरा के विकास में भौगोलिक के साथ साथ ऐतिहासिक कारको का भी योगदान रहा है। स्थापत्य कला से राजा-महाराजाओं का प्रेम, लोगों में अपने पूर्वजों की स्मृतियाँ जीवत रखने की सेठ साहूकारों की चाह और धार्मिक-सांस्कृतिक मान्यताओं ने भी प्रदेश के विभिन्न भागों में कलात्मक जल संरक्षण प्रणालियों के निर्माण को प्रेरित किया । प्राकृतिक जल स्त्रोतों की पूजा, प्रत्येक बूँद के सदुपयोग को प्रेरित करने वाली लोककथाओं और आस्थाओं ने कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में भी जीवन को आसान बनाने में योगदान दिया है। राजस्थानी भाषा की ये पंक्तियाँ यहाँ के जनमानस में जल के महत्व को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है "घी डुळे तो म्हारो काई नी बिगड़े। पाणी डुळे तो म्हारो जियो जळ जाय ||

तालाब, झील, बावड़ी, खड़ीन, झालरा, नाडी, टाका, टोबा, कुई, बेरी आदि राजस्थान की कुछ परम्परागत जल संचय प्रणालियाँ है। तालाब राजस्थान में वर्षा जल के संचय के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखते है। प्रदेश में तालाबों के निर्माण की समृद्ध परंपरा में राजाओं, सेठों और समुदाय द्वारा इनका निर्माण किया जाता था एवं इनका रखरखाव सामुदायिक उत्तरदायित्व होता था। तालाबों के कारण आस पास के कुओं एवं बावड़ियों का जलस्तर भी बना रहता था। चित्तौड़गढ़ में पद्मिनी तालाब जैसलमरे में गदसीसर एवं सवाई माधोपुर में सुखसागर आदि कुछ प्रसिद्ध तालाब है।

झीले प्रदेश की जल संचय प्रणालियों में प्रमुख है। झीलों का निर्माण पेयजल सिंचाई और धार्मिक प्रयोजनों के लिए राजाओं सेठों और आम जन द्वारा करवाया गया। अजमेर की आनासागर एवं फायसागर, उदयपुर की पिछोला एवं फतेहसागर, कोठा की जवाहरसागर, जोधपुर की बालसमंद और बीकानेर की अनूपसागर आदि कुछ प्रमुख झीलें हैं। बावड़ी निर्माण राजस्थान की प्राचीन परंपरा रही है। बावडियों का निर्माण देवालयों और दुर्गों में किया जाता था। बावडियाँ धार्मिक प्रयोजनों और वर्षा जल संचय के लिए बनायी जाती थी। बावड़ियों के चारों और कलात्मक बरामदे और महलों का निर्माण भी किया जाता था। आभानेर की चाँद बावड़ी का निर्माण हर्षद माता मंदिर में किया गया था। बावड़ियों का जीर्णोद्धार किया जाए तो न केवल जल संचय होगा परन्तु पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं।

खड़ीन का आविष्कार पारंपरिक तकनीकी जान के आधार पर जैसलमेर के पालीवालों द्वारा किया गया था। ढालवाली भूमि पर दो तरफ मिट्टी और एक तरफ पत्थर की दीवार बनाकर इसका निर्माण किया जाता था।

खड़ीन मुख्यतः अनुपजाऊ भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिए उपयोग ली जाती थी। खडीन हेतु भूमि राज्य द्वारा दी जाती थी जिसके एवज में उपज का एक भाग राज्य को चुकाना होता था।
झालरा अपने से ऊँचे स्त्रोतों के जल रिसाव से जल संचय करने की प्रणाली हैं। आयताकार तीनों ओर सीढ़ियों तथा आकर्षक वास्तुशिल्प इनकी प्रमुख विशेषता है। ये धार्मिक स्नान के उद्देश्य से बनायें जाते थे। जोधपुर का महामंदिर झालरा अपने आकर्षक स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है। नाड़ी पश्चिमी राजस्थान के लगभग प्रत्येक गाँव में पायी जाती है। रेतीले मैदान में खुदाई करके एक गड्डे का निर्माण किया जाता है जिसमे वर्षा जल एकत्र होता है। इनमें जल निकासी की व्यवस्था भी होती है। नाड़ियों का जल लगभग वर्ष भर उपयोग में आता है। वर्तमान में इनके अस्तित्व पर संकट आ गया है। कालांतर में जलग्रहण क्षेत्रों में अतिक्रमण, संक्रिय सामुदायिक भागीदारी की भावना में कमी, जल आपूर्ति का बढ़ता दबाव, कृषि का व्यवसायीकरण, उत्तरदायी निकायों द्वारा इन संरचनाओ की उपेक्षा आदि कारणों ने जल संचय प्रणालियों के पतन में मुख्य भूमिका निभाई है।

जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा मे अनियमितता, मरुस्थल के प्रसार और विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ती करने हेतु प्राकृतिक जल संसाधनों पर बढ़ते दबाव को देखते हुये जल प्रबंधन पहले की अपेक्षा अधिक प्रासंगिक हो गया है। राजस्थान देश का 10 प्रतिशत से अधिक भू भाग धारण करता है। देश की कुल जनसँख्या की लगभग साढ़े 5 प्रतिशत जनसंख्या यहाँ निवास करती है परन्तु देश में उपलब्ध जल संसाधन का 2 प्रतिशत से भी कम राज्य में उपलब्ध है। पारंपरिक जल संचय प्रणालियों का संरक्षण न केवल सूदूर क्षेत्रों में पेयजल उपलब्धता की बेहतर बना सकता है बल्कि अकाल और सूखे से लड़ने में सक्षम बनाकर कृषि अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करके रोजगार के अधिक अवसर पैदा कर सकता है। इन संरचनाओं के संरक्षण से प्राकृतिक जल स्त्रोतों के अंधाधुंध दोहन पर लगाम लगेगी और भू-जल स्तर में सुधार होगा। अतः परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियों को पुनर्जीवित करने की महती आवश्यकता है क्योंकि
पाणी सु खलिहान खिले, मिनख करे प्रगत। पाणी जद रूठे तो, धरा घोर दुर्गत॥

कुलदीप सिंह शेखावत, पूर्व कार्मिक

दिया हिंदी ने हमको गौरव
बनकर हिन्द की पहचान
लेकिन आज भी हिंदी को
हमने भाषा माना आम

आम की तरह पीया हिंदी रस
कि अपनी बुलंद आवाज
लेकिन ना पहना सके
हम हिंदी को उसका ताज

जिंदगी

कर ले तू सफर पूरा मुसाफिर
फिर ना रहेगा यह दिन कल
आज है जो तेरा है समेट ले इसको
रह जाएगी यह दास्तां यहीं पर कल
गुजर रही है जिंदगी हर पल
वक्त दोबारा ना आएगा फिर कल
जो होना है होकर रहेगा
भाग्य में लिखा है वही मिलेगा
बताना चाहें तो भी क्या बताएं
मुश्किल डगर है इस पनघट की
मुस्कुराने की भी कीमत अदा होती है
आंसू भी अपना हिसाब बराबर कर लेते हैं
मुसीबतें आई हैं तो हल भी साथ लाई हैं।
जैसे बिना चाबी का कोई ताला नहीं होता है
हर पल वक्त बदल जाता है
आज आंसू हैं तो कल खुशियां भी होंगी
जिंदगी चलती है लेकर दो पहलू
खुशी का एक पहलू गम का दूसरा पहलू
जिंदगी का सबसे बड़ा सच मौत होती है

जिंदगी का दूसरा नाम खुशी होता है।
सफल होना हमारी किस्मत में है
मिलेगा क्या यह कर्मों का नतीजा है
होते हैं सिक्के के दो पहलू
जिंदगी के भी दो पहलू हैं
खुशी मिली तो मुस्कुरा दिए
और गम मिले तो आंसू बहा दिए
खुद को करना है मजबूत,
खुशी मिली तो अहंकार नहीं
और गम मिले तो टूटना नहीं
रखना है भरोसा वक्त पर

आशा को साथ लेकर चलना है
परिस्थितियां लाती हैं खुशी और गम
कहते हैं यह वक्त भी गुजर जाता है,
और गुजरा हुआ वक्त कभी लौटकर नहीं आता है

नीलम मीणा, वरि. लेखापरीक्षक

आओ! मानसिक स्वास्थ्य जीना सीखें

आप स्वास्थ्य शब्द से तो काफी हद तक परिचित ही होंगे। आमतौर पर हम इसे प्रभावशाली शारीरिक स्थिति या शारीरिक क्रियाओं के संबंध में ही समझते हैं। जब हम स्वास्थ्य की अवधारणा का मन के संदर्भ में उपयोग करते हैं तब हम 'मानसिक स्वास्थ्य' शब्द का प्रयोग करते हैं। वास्तव में, हमें शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है। आप को यह ज्ञात होना चाहिए कि हमारा शरीर तभी अपनी सभी क्रियाएं भलीभांति कर पाने में सक्षम हो सकता है जब हमारी मनोदशा संतुलित और स्वस्थ हो। इस लेख को पढ़ने के पश्चात् आप मानसिक स्वास्थ्य और स्वच्छता के अर्थ को समझ सकेंगे। इस के अतिरिक्त आप कमजोर मानसिक स्वास्थ्य को दर्शाने वाली आदतों और व्यवहार को और अच्छे स्वास्थ्य के प्रोत्साहक कारकों को भी जान सकेंगे। अंत में आप समय का कुशल प्रबंधन करने की प्रभावशाली कूटनीतियां सीख सकेंगे, ताकि आप को सर्वोत्तम परिणाम मिले।

कार्यालय में दिन रात कार्य में लिप्त होने के नाते हम यह महसूस करते है की मन का प्रभाव मनुष्य की हर गतिविधियों पर पड़ता है। सम और विषम परिस्थितियों में मन को कैसे प्रसन्न रखा जाए, इस सम्बन्ध में विभिन्न शास्त्रों और मनीषियों के चिन्तन को इस लेख में प्रस्तुत किया गया है।

स्वस्थ मन कैसे रहे? हमें यह समझना होगा कि हमारा मन क्या चाहता है। मन आनन्द चाहता है। जरा विचार करें, बच्चे खुश रहते हैं। उनका पेट भरा है तो ठीक है। गरीबी-अमीरी, संसार की विषमताओं का उनके ऊपर कोई असर नहीं पड़ता है। वह सामान्यतः माँ पर आश्रित रहते हैं, उन्हें लगता है कि हर समस्या माँ को बता दो और निश्चिन्त हो जाओ। एक तरह से कहा जाए तो उनका सर्वभावेन समर्पण माता के प्रति होता है और यही उनकी प्रसन्नता का रहस्य है।

इसी प्रकार हमारा समर्पण भी परमपिता पर हो व हम सहज भाव से स्वयं को परमात्मा को समर्पित करके निश्चिन्त मन से अपने कार्यों को करते रहें तो सदा शान्त रहेंगे। इस लेख में वेदों गीता, बाइबिल व उपनिषदों आदि के भी उद्धरण दिए गए हैं। जैसे बाइबिल में विश्वास का महत्त्व है तो वेदों में शिवसंकल्प का है। बहुधा स्वास्थ्य का प्रयोग व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और अध्यात्मिक कुशलता के संदर्भ में किया जाता है। अतः मानसिक स्वास्थ्य, स्वास्थ्य की व्यापक अवधारणा का ही एक तत्व है। यह व्यक्ति के भावनात्मक व व्यवहारात्मक सामंजस्य के इष्टतम स्तर से संबद्ध है। यह बाहरी वातावरण में विद्यामान परिस्थितियों के संदर्भ में व्यक्ति की आवश्यकताओं, इच्छाओं, अभिलाषाओं और दृष्टिकोण में संतुलन बनाए रखने की अवस्था है।

मानसिक स्वच्छता की अवधारणा मानसिक स्वास्थ्य से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। स्वच्छता की अवधारणा को हमें रोगों और बीमारियों से बचाने के लिए किसी व्यक्ति को स्वयं अपने रहन-सहन और कार्य करने के स्थान को साफ सुथरा रखने के संदर्भ में प्रयोग करते हैं। जब हम इस अवधारणा को मन

के क्षेत्र में विस्तार से देखते हैं तो इसे अच्छे, प्रभावशाली और सक्षम मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक व्यवहारवादी, भावनात्मक और सामाजिक कौशल को विकसित करने, कायम रखने और प्रोत्साहन देने की कला के रूप में पाते हैं। व्यक्ति विशेषकर कार्यालय में कार्यरत हम जैसे कार्मिक दैनिक जीवन में मानसिक व व्यवहारात्मक स्तर पर निम्नलिखित बातों का पालन कर इन कौशलों को प्राप्त कर सकता है। मानसिक स्वस्थता की आवश्यकता: मानसिक अस्वस्थता के बढ़ते भार से संबंधित सामाजिक और आर्थिक लागत ने मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और साथ ही मानसिक रोगों के निवारण और उपचार की संभावनाओं पर ध्यान केन्द्रित किया है। इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य का संबंध बर्ताव से जुड़ा है और उसे शारीरिक स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता का मूल समझा जाता है।

- शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य का निकट संबंध है और यह निःसंदेह रूप से सिद्ध हो चुका है कि अवसाद के कारण हृदय और रक्तवाहिकीय रोग होते हैं।
- मानसिक विकार व्यक्ति के स्वास्थ्य-संबंधी बर्तावों जैसे, समझदारी से भोजन करने, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद, सुरक्षित यौन व्यवहार, मद्य और धूम्रपान, चिकित्सकीय उपचारों का पालन करने आदि को प्रभावित करते हैं और इस तरह शारीरिक रोग के जोख़िम को बढ़ाते हैं।
- मानसिक अस्वस्थता के कारण सामाजिक समस्याएं भी उत्पन्न होती हैं जैसे, बेरोजगारी, बिखरे हुए परिवार, गरीबी, नशीले पदार्थों का दुर्व्यसन और संबंधित अपराध।
- मानसिक अस्वस्थता रोगनिरोधक क्रियाशीलता के ह्रास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- अवसाद से ग्रस्त चिकित्सकीय रोगियों का हश्र बिना अवसाद से ग्रस्त रोगियों से अधिक बुरा होता है।
- लंबे चलने वाले रोग जैसे, मधुमेह, कैंसर, हृदय रोग अवसाद के जोखिम को बढ़ाते हैं।

मानसिक स्वस्थता को बेहतर बनाने के लिए इन उपायों को अपनाएं

आजकल भागदौड़ वाली जीवनशैली में तनाव होना आम बात है। ऐसे में खुद को मानसिक रूप से ठीक रखना भी एक चुनौती होती है। हम अपने स्वस्थ दिमाग के चलते ही जीवन में होने वाली समस्याओं का सामना कर सकते हैं। इसके अलावा तरक्की के पड़ाव पर पहुँचने के लिए भी स्वस्थ दिमाग की आवश्यकता होती है। अब सवाल आता है कि दिमाग को फिट रखने के लिए क्या करना चाहिए। दिमाग को स्वस्थ रखने के कई तरीके हैं। आइए हम आपको बताते हैं दिमाग को फिट रखने के तरीके।

- **नया सीखते रहें** - दिमाग को स्वस्थ रखने के लिए कोशिश करनी चाहिए कि कुछ नया सीखते रहना चाहिए। इसके अलावा जो काम आपको पसंद है उसके लिए समय निकालकर उन्हें करें। इससे आपको मजा भी आएगा और अधिक सीखने का मौका मिलेगा।

- **शरीर का ध्यान रखें** - ऐसा माना जाता है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग रहता है। स्वस्थ शरीर रखने के लिए आपको अपने सेहत का ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए आप हेल्दी भोजन का सेवन करें और खूब पानी पिएं। इसके अलावा व्यायाम करें और पूरी नींद लें। खासकर धूम्रपान से दूरी बनाकर रखें।
- **सकारात्मक लोगों के साथ समय बिताएं** - ऐसे लोगों के साथ अधिक समय बिताएं जो सकारात्मक सोच के हों। जो लोग सामजिक रूप से सक्रिय होते हैं, वो लोग अधिक स्वस्थ रहते हैं। इसलिए कोशिश करनी चाहिए कि लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करें और अच्छा सोचें।
- **दूसरों की सहायता करें** - हर व्यक्ति को कोशिश करनी चाहिए कि वह जरूरत पड़ने पर दूसरों की मदद करें। अपनी ऊर्जा को दूसरे की मदद में लगाने से आपको काफी खुशी मिलेगी। खुश रहना आपके दिमाग को स्वस्थ रखने में सहायक होता है।
- **तनाव को दूर रखें** - आज के समय में हर किसी जिंदगी में तनाव है। जिसके चलते हम शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार हो जाते हैं। ऐसे में हमें तनाव को दूर करना चाहिए। तनाव से छुटकारा पाने के लिए जिंदगी में प्रबंधन की बहुत आवश्यकता होती है। इसके लिए हमें नियमित रूप से व्यायाम करना, खेलना, टहलना आदि को अपनी दिनचर्या में शामिल करें।
- **शांत रहें** - जीवन में शांत रहने के लिए ध्यान और योग करें। यह आपको मानसिक रूप से शांत रखता है और एकाग्रता को बढ़ाता है। शांत रहने से आपका दिमाग स्वस्थ रहता है। इसके चलते आपके जीवन में अधिक तकलीफें नहीं होती हैं।

निष्कर्ष:- हमें खाने या सोने की आदतों में आवश्यक बदलाव करना चाहिए। हमें अधिकाधिक पसंदीद लोगों और गतिविधियों से दूरी नहीं बनाना चाहिए। जिन लोगों में ऊर्जा हीनता पाई जाती हो, उनसे उचित दूरी बनाना चाहिए। धूम्रपान, शराब पीना और ड्रग्स का अधिक उपयोग बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए। असमंजस की स्थिति में होना, चीजों को भूलना, गुस्सा आना, हमेशा परेशान रहना, चिंतित अथवा डरा हुआ महसूस करना, मूड स्विंग्स होना, दिमाग में बार-बार उन नकारात्मक यादों का आना, जिन्हें भूलना चाह रहे हो, ऐसी आवाजें सुनना और बातों पर विश्वास करना जो सच नहीं हो, खुद को या दूसरों को नुकसान पहुंचाने की सोच रखना आदि को मस्तिस्क में कभी भी नहीं आने देना चाहिए। जीवन लक्ष्य एवं जीवनशैली के बीच जितना सामंजस्य एवं सन्निकटता होती है जीवन लक्ष्य की पूर्ति उतनी ही सहज एवं सरल हो जाती है। परिणामस्वरूप ऐसे व्यक्तियों को जीवन लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य होती है। इससे उन्हें जीवन में सार्थकता का अहसास सदैव से ही रहता है तथा वे प्रसन्न रहते हैं एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं।

शंकर लाल सीमावत, कनिष्ठ अनुवादक

आयकर अधिनियम के ब्याज/दण्ड संबंधित प्रावधान

आयकर अधिनियम 1961 की धारा 234 ए 234 बी एवं 234 सी में ब्याज दण्ड सम्बन्धी प्रावधानों का वर्णन किया गया है। वह इस प्रकार है-

1. धारा 234ए

आयकर अधिनियम 1961 की धारा 234 ए निर्धारित द्वारा आयकर विवरणी वित विभाग द्वारा निर्धारित तिथि से विलम्ब से भरने पर विलम्बित अवधि के लिए ब्याज दण्ड के लिए उतरदायित्व हैं। इस धारा के तहत बकाया टेक्स देनदारी (उदगम पर कर कटौती (TDS) एवं अग्रिम कर घ़टाने पर प्रतिमाह 01 प्रतिशत की दर से निर्धारित विलम्ब अवधि के लिए ब्याज दण्ड भरना पडता है। आयकर विवरणी निर्धारिती को निम्नलिखित तारीखों तक भरना अनिवार्य है---

1. व्यक्ति निर्धारिती जिनके लेखों की लेखापरीक्षा कराने की आवश्यकता नहीं है (व्यक्ति, हिन्दु अविभाजित परिवार, व्यक्तियों का समुदाय, व्यक्तियों का संघ) ---- 31 जुलाई
2. ऐसे व्यक्ति, कम्पनियां एवं फर्म जिनके लेखाओं की लेखापरीक्षा सी.ए. से कराना अनिवर्य है। - 31 अक्तूबर
3. ऐसे आयकर दाता जिनकों धारा 92 ई के तहत रिपोर्ट प्रस्तुत करना अनिवार्य है अर्थात ऐसे निर्धारिती (Assesse) जिसने गत वर्ष कोई अन्तर्राष्ट्रीय व्य़वहार हो - 30 नवम्बर

उदाहरणः- वित्त वर्ष 2021-22 की आयकर विवरणी 31 जुलाई 2022 तक भरना अनिवार्य है । यदि किसी निर्धारिती द्वारा 31 जुलाई तक आयकर विवरणी नहीं भरी है, तो वह निर्धारित विलम्ब से ब्याज दण्ड सहित 31 दिसम्बर 2022 तक अपनी आयकर विवरणी भर सकता है।

धारा 234 एफ -- बकाया इनकम टैक्स पर ब्याज के अलावा आयकर विवरणी विलम्ब से भरने पर दण्ड भी लगाया जाता है। वह इस प्रकार है--

I. 31 दिसम्बर तक रिटर्न दाखिल करने पर 5000 रुपये
II. 31 दिसम्बर के बाद 31 मार्च तक रिटर्न दाखिल करने पर 10000 रुपये

यदि किसी निर्धारिती की वर्ष भर की आय राशि 5 लाख से कम है तो लेट रिटर्न की पेनल्टी सिर्फ राशि 1000 रुपये लगेगी, भले ही आप लेट रिटर्न 31 दिसम्बर तक भरे या 31 मार्च तक लेकिन बकाया टैक्स पर 01 प्रतिशत प्रतिमाह की दर से ब्याज तो चुकाना ही पड़ेगा।

धारा 234 बी - आयकर अधिनियम 1961 की धारा 234 बी के तहत यदि किसी निर्धारिती का आयकर दायित्व उद्गम पर कर कटौती के पश्चात किसी वितीय वर्ष में राशि रुपये 10000/-- से अधिक बनती हो और निर्धारिती ने अग्रिम कर नहीं चुकाया हो, तो उसे बाद में जुर्माने के साथ अग्रिम कर चुकाना पड़ता है।

निर्धारिती को बकाया अग्रिम कर पर 1 प्रतिशत भाग के लिए ब्याज चुकाना पड़ता है। इसी प्रकार यदि निर्धारिती ने कुल अग्रिम कर चुकाया है तो भी धारा 234 बी के तहत बकाया टैक्स का 1 प्रतिशत प्रतिमाह की दर से ब्याज चुकाना पड़ता है।

<u>उदाहरणः</u>--- यदि किसी निर्धारिती का कुल कर दायित्व राशि रुपये 60000/- है और उसने 31 मार्च तक 52000/- रुपये कर के चुका दिये हैं तथा शेष 8000/- रुपये कर का भुगतान निर्धारिती द्वारा आयकर विवरणी भरने पर किया जाता है तो उक्त राशि पर 1 प्रतिशत प्रतिमाह (अप्रैल माह से विवरणी भरने तक) निर्धारिती को इस धारा के तहत ब्याज का भुगतान करना पड़ेगा।

आयकर अधिनियम 1961 की धारा 207 के तहत यदि किसी वरिष्ठ नागरिक की व्यवसाय से कोई आय नहीं है, तो उस पर अग्रिम कर का कोई दायित्व नहीं है।

अग्रिम कर किसे भरना पडता है?

सैलेरी के अलावा, किसी व्यक्ति या बिजनेसमैन की सालाना टैक्स देनदारी राशि रुपये 10000/-- से अधिक है तो उसे धारा 208 के तहत् अग्रिम कर जमा कराना अनिवार्य होता है। यह अग्रिम कर चार किश्तों में हर तिमाही को भरना पड़ता है। ऐसी आमदनियों में सैलेरी को छोड़कर बाकी सब तरह की आमदनी शामिल की जाती है। जैसे– बिजनैस, पेशे से आय, बैंक जमा से ब्याज, प्रोपर्टी से किराया, इनाम एवं लाटरी से आय इत्यादि–

धारा 234सी - आयकर अधिनियम 1961 की धारा 234सी के तहत पेनेल्टी तब लगती है जब निर्धारिती ने अग्रिम आयकर की किश्त निर्धारित तिथि तक अदा न की हो या फिर अग्रिम कर की किश्त निर्धारित प्रतिशत से बहुत कम चुकायी हो।

उल्लेखनीय है कि अग्रिम कर की किश्तें निम्नलिखित तारीखों तक निर्धारित मात्रा में चुकता कर दी जानी अनिवार्य है।

(i)	अग्रिम कर का कम से कम 15 प्रतिशत	15 जून तक
(ii)	अग्रिम कर का कम से कम 45 प्रतिशत	15 सितम्बर तक
(iii)	अग्रिम कर का कम से कम 75 प्रतिशत	15 दिसम्बर तक
(iv)	अग्रिम कर का कम से कम 100 प्रतिशत	15 मार्च तक

अग्रिम कर की किश्त ऊपर लिखित के अनुसार नहीं भरने या बहुत कम भरने पर बकाया कर का 1 प्रतिशत प्रतिमाह की दर से ब्याज अलग से भरना पड़ता है। चूंकि अग्रिम कर की किश्तें हर तिमाही में भरी जाती है। इसीलिए प्रत्येक बकाया किश्त पर ब्याज भी तीन महिने का ही लगता है।

यदि निर्धारिती ने वित्तीय वर्ष के 31 मार्च से पहले अपनी आय पर पूरा टैक्स जमा करा दिया है तो निर्धारिती पर इस धारा के तहत ब्याज का दायित्व नहीं बनता है।

उदाहरण - यदि किसी निर्धिरिती का कर दायित्व 1 लाख रुपये बनता है और उसका T.D.S. नहीं है तो–

भुगतान तिथि	अग्रिम कर देय		अग्रिम कर भुगतान	कमी	ब्याज गणना
15 जून	15%	15000	5000	10000	@ 1% X3X10000=300
15 सितम्बर	45%	45000	25000	20000	@ 1% X3X20000=600
15 दिसम्बर	75%	75000	35000	40000	@ 1% X3X40000=1200
15 मार्च	100%	100000	50000	50000	@ 1% X1X50000=500

कुल ब्याज देय 2600/--

सत्येन्द्र कौशिक, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

राष्ट्रभाषा बिन गूंगा देश
देख आओ भले देश परदेस
फिर क्यों हिंदी को ले क्लेश
जब कि यह तो है अतिविशेष

विविध भाषाओं की यह माता
हर भाषा को अपनाना आता
हे बोली बोली से इसका नाता
बनी यह भारत भाग्य विधाता

फिर भी मौन हिंदी का मान
और देश बनना चाहे महान
कैसा देशवासियों यह अज्ञान
इसकी पहचान तो हमारी शान

मन के जीते जीत है

माना कि दूर किनारा है, किंतु सागर ने ललकारा है।
यू बैठे रहना, हाथ बांध, वीरों को नहीं गँवारा है।
वे कायर है जो हार गये, नर-नाहर बाजी मार गये।
इन तूफानों से टकराकर, हिम्मत वाले उस पार गये।

बाल्यकाल से अध्ययन में मेधावी होने व कक्षा X, XII, स्नातक व स्नाकोत्तर परीक्षाओं में योग्यता सूची में स्थान प्राप्त करने जैसी सफलताओं मे मध्य, जीवन के एक दौर में, मैं कार्यालय की एस.ए.एस. परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया था। यह मेरे लिये अभूतपूर्व व अलग अनुभव था, तीन दिवस तक मुझे विश्वास ही नही हुआ कि मेरे साथ यह क्या हो गया, मैं अंदर से टूट गया था व निराशा के भाव मन में घर बनाने लगे थे। मेरे नेत्रों के समक्ष अंधेरा छा गया था।

हर असफलता हमारी परीक्षा लेती है और यह हम पर निर्भर करता है कि हम ऐसी परिस्थिति में टूट जाये, हार जाये अथवा पुन: खुद को स्थापित करे। जीवन के इस कठिन समय में मैने पेशेवर योग्यता हासिल करने की ठानी व भारतीय कंपनी सचिव संस्थान से कंपनी सचिव परीक्षा में प्रविष्ठ होने हेतु पाठ्यक्रम में पंजीकरण करवाया और कंपनी सचिव परीक्षा उत्तीर्ण कर संस्थान का सदस्य बना। कंपनी सचिव प्रशिक्षण कार्यक्रम में, मैं सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी बना व इसी मध्य एस.ए.एस. के साथ ही प्रथम प्रयास में राजस्व परीक्षा, सी.पी.डी. प्रथम परीक्षा, सी.पी.डी द्वितीय परीक्षा, यू.एन. ऑडिट परीक्षा 2016 तथा यू.एन. ऑडिट परीक्षा 2020 उत्तीर्ण की।

असफलता हम में बहुत परिवर्तन लाती है व विपरित परिस्थितियां हमारी परीक्षा भी लेती है। हमे भी हिम्मत नही हारनी चाहिये व मन को नियंत्रित रख कर मजबूती से कदम आगे बढ़ाने चाहिये। इसलिये यह कहा गया है कि "मन के जीते जीत है, मन के हारे हार है।"

अमित गोयल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ,
पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो,
यह मैं सह नहीं सकता - आचार्य विनोबा भावे

कहना नहीं करके दिखाना है

कुछ वर्ष पहले की बात है जब मैंने अपनी स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई पूरी करके प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी शुरू ही की थी। प्रतियोगी परीक्षाओं में मेरा प्रथम प्रयास था - एस.एस.सी - सी.पी.ओ. की परीक्षा। शुरू से ही पढाई - लिखाई में अच्छी रुचि होने के कारण लिखित परीक्षा पास करना मेरे लिए कोई भारी काम नहीं था। मैंने एस.एस.सी. - सी.पी.ओ. टीयर-1 की परीक्षा बहुत ही अच्छे अंको से उत्तीर्ण की। चूंकि यह मेरा प्रथम प्रयास ही था, अत: परिणाम देखकर घर में खुशी का माहौल था साथ ही घर वालों को मेरे से ढेरों आशाएँ भी थी।

लेकिन थानेदार बनने की दौड़ में अब आगे शारीरिक परीक्षा पास करने की बारी थी। पिछले कुछ वर्षों से जीवन में शारीरिक गतिविधियों के नहीं होने तथा ठण्ड में आलस के चलते शारीरिक परीक्षा की तैयारी मेरे लिए बड़ा ही भारी काम महसूस होने लगा था। लेकिन माता-पिता तथा परिवार के अन्य लोगों की आशाएँ एवं उम्मीद देखते हुए मैंने जैसे-तैसे शारीरिक परीक्षा की तैयारी शुरू की। समय के साथ बाकी गतिविधियाँ तो ठीक थी लेकिन जब दौड़ लगाने की बात आई तो मेरी साँस फूलने लगी तथा जैसे-तैसे करके बड़ी मुश्किल से 200-400 मीटर दौड़ पाती थी। धीरे-धीरे में हतोत्साहित होने लगी तथा शारीरिक परीक्षा पास करना मुझे असंभव सा लगने लगा।

लेकिन एक दिन हमारे एक पड़ौसी जिनसे हमारे घनिष्ठ संबंध थे उन्होनें मुझे बुलाया तथा मेरे दौड़ने का कारण पूछा। मेरे द्वारा शारीरिक परीक्षा के बारे में बताने पर उन्हौंने कहा - "ये नौकरी - फौकरी आपके बस की बात नहीं है, ससुराल जाओ और घर-परिवार संभालो। नौकरियाँ ऐसे ही नहीं मिलती"। उस समय उनको जवाब देने के लिए मेरे पास मानो कोई शब्द ही नहीं थे। इसलिए मैं उनकी बातें सुनकर चुपचाप रह गई। उनकी बातें सुनकर दुःखी मन से सोच-विचार करते हुए आ ही रही थी कि पीछे से एक अन्य पडौसी ने ताना मारते हुए कहा - "दौडने से नौकरियाँ नहीं लगती"। इतना ही नहीं पड़ौसी हमदर्द बनकर मेरे माता-पिता को भी तरह- तरह की बातें कहने लगे। लेकिन पड़ौसियों के तानों तथा तरह- तरह की बातो ने मेरे लिए "एनर्जी ड्रिंक" की तरह काम किया तथा मेरे अंदर एक नई ही ऊर्जा का संचार होने लगा। जहाँ मेरे लिए 200-400 मीटर दौड़ना भी मुश्किल होता था, अब मैं 2-3-कि.मी. तो आसानी से और बहुत ही कम समय में दौड़ने लगी। बाकी अन्य गतिविधियों में भी काफी अच्छा सुधार होने लगा। इसी तरह तैयारी चलती रहीं और अंततः मैने शारीरिक परीक्षा भी बहुत ही अच्छे अंको से पास की।

इतना ही नहीं, मैंने अन्य परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण करने लगी। लगभग एक साल पश्चात दो-दो सरकारी नौकरियों के जोइनिंग लेटर मेरे हाथों में थे। इसके बाद उन ताना मारने वाले और तरह तरह की बातें करने वाले लोगों के ऐसे स्वर बदलने लगे मानों हवा की दिशा ही बदल गई हो। वो मेरे गुणों का बखान

करने लगे तथा मेरे शुरू से ही मेधावी होने की बाते करने लगे। मैं सभी को यही संदेश देना चाहती हूँ कि कभी भी दुनियाँ की बात सुनकर अपना लक्ष्य ना बदले, बल्कि दुगुनी ताकत से अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर रहे। एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी तथा यही ताने मारने वाले समाज को सबसे बेहतर जवाब होगा।

अंत में कुछ पंक्तियाँ मेरे और आपके उत्साहवर्धन हेतु -

तु रख हौसला बुलंद,
तु आसमान को भी पायेगा,
कहने वाले कहते रहेंगे,
तु हार कर भी जीत जायेगा।
तु कर यकीन खुद पर,
तु हर मंजिल को पायेगा,
वो लिखते रहेंगे हार तेरी,
तू जीत का जश्न मनायेगा।
ख्वाइशों के इस दौर में, तु जरूरतो को पहचानेगा,
तुझे चाह है मंजिल की इस कदर,
तेरा हर कदम उसी की ओर बढ़ता जायेगा।

सुश्री सुमित्रा, बहु कार्य कर्मचारी

तुम स्त्री हो

लोग कहते हैं कि तुम कमजोर हो !
पर मुझे तो नहीं लगता !
तुम जननी, माँ और शक्ति हो,
तुम पाथेय, तुम प्रेरणा हो !
फिर क्यों अधूरापन लिए जीती हो ?

तुम स्त्री हो
इसलिए कोमल हो, भावुक हो !
तुम सरस, स्निग्ध और व्यापक हो !
तुम मार्गदर्शक, संरक्षक हो,
फिर क्यों अंधेरे में सिसकती हो ?

तुम स्त्री हो
तुम कल्पना, तुम सृष्टि, तुम नाद हो !
तुम सृजन, तुम पालन तुम ही संहार हो !!
फिर क्यों बेड़ियों में जकड़ी हो ?

तुम स्त्री हो
पहचानों अपनी शक्ति को !
सृजन करो नए नियमों का !
पालन करो सिंहों का !
नाद को गूंज जाने दो !
राक्षसों को मर जाने दो !

याद रखो तुम स्त्री हो,
तुम सृष्टि का निर्माण करोगी,
हवाओं को महका दोगी,
तुम सिंहों को दहाड़ना सिखाओगी,
बेबस और लाचार नहीं,
दुर्गा से साक्षात्कार कराओगी।

सुरेंद्र चतुर्वेदी, अतिथि रचनाकार

स्वास्थ्य जीवन का खजाना, बागवानी का जमाना

हमारे भौतिक शरीर का निर्माण प्रकृति के पांच तत्वों से मिलाकर बना है। इनमें से पृथ्वी एक ऐसा तत्व है जो जीवन को स्थिरता प्रदान करता है। जब हम तनावग्रस्त, उदास या अवसाद महसूस करते हैं, तो हम एक शांत जगह की यात्रा करना पसंद करते हैं जो फूलों, पेड़ों, पक्षियों और घाटी के पास बहने वाली नदी जैसी कोई जगह हो। प्रकृति की गोद में हम आराम और घर पर होने जैसा महसूस करते हैं। इन दिनों खेती में बागवानी (Horticulture) तेजी से उभरता हुआ कृषि व्यवसाय है। इस क्षेत्र में कैरियर की भी अपार संभावनाएं हैं। बागवानी को भविष्य की खेती भी कहा जाता है। इसे एक बार लगा देने से कई सालों तक लाभ ले सकते है। बागवानी अपने अंदर तमाम संभावनाएं समेटे हुए है जो किसानों के लिए भविष्य में सुनहरे आय का एक साधन बन सकती है। आपको बता दें, कुछ सालों में बागवानी फसलों के उत्पादन में काफी तेजी से विकास हुआ है। फलों की मांग बाजार में सालभर बनी रहती है। फूलों की बात करें तो इसके उत्पादन में भी काफी वृद्धि दर्ज की गई है।

बागवानी एक ऐसी विधा है जिसमें बड़ी पूंजी की जरूरत नहीं होती है। इसकी शुरुआत एक छोटे निवेश से भी की जा सकती है। आप अपनी छत से भी इसकी शुरुआत कर सकते है जैसे- निजी फॉर्महाउस, व्यावसायिक पौधशाला, आपका बगीचा एक आदर्श स्थान हो सकते हैं। आजकल अधिकतर सौंदर्य और गिफ्ट की दुकानों में इसकी चमक देखी जा सकती है। सजावटी फूल शीशे के पॉट में बहुत आकर्षक लगते हैं और इन्हें शांति के लिए भी उपयोग किया जाता है जिसके कारण अधिकतर लोग इकोफ्रेंडली गिफ्ट और बुके को बढ़ावा दे रहे हैं।

बागवानी की चुनौतियां (Gardening Challenges) - हर क्षेत्र के कुछ फायदों के साथ-साथ कुछ नुकसान भी होते हैं। बागवानी भले ही बहुत किफायती और लाभकारी विधि हो, लेकिन कभी-कभी इसमें भी नुकसान और चुनौतियां का सामना करना पड़ता है। इसकी पहली चुनौती के अन्तर्गत कृषि के बदले बागवानी को कम महत्त्व मिलता है। सरकार किसानों के लिए जितने कार्य करती है अगर इतना ही ध्यान बागवानी के हिस्से में भी आए तो बात बन जाए। पिछले कुछ सालों के रिकॉर्ड बताते हैं कि सूखे के चलते या किसी अन्य आपदा के कारण कृषि को काफी नुकसान उठाना पड़ा लेकिन बागवानी को नहीं, क्योँकि बागवानी अपने अंदर विविधता समेटे हुए है। एक बार में विभिन्न प्रकार की उपज तैयार करने से इसको कम नुकसान उठाना पड़ता है। कम बजट होना भी इसकी एक मुख्य समस्या है जो इसके विकास में रुकावट है।

बागवानी में रोजगार (employment in horticulture) - एक विकासशील विधि होने के चलते बागवानी अपने साथ रोजगार के अवसर लेकर चलती है। बागवानी से उपजे फल, फूल और सब्जियाँ आदि का व्यवसाय करके किसान मालामाल हो रहे हैं। इस क्षेत्र में भविष्य की चाह रखने वाले छात्रों के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर हैं। आप बागवानी उद्योग, सरकारी या शैक्षणिक संस्थानों या फिर निजी क्षेत्रों में भी प्रवेश कर सकते हैं। आप सरकारी क्षेत्र में पार्क, सार्वजनिक उद्यान, सरकारी लॉन आदि का

रखरखाव कर सकते हैं। यदि आप स्वरोजगार करना चाहते हैं तो फल, फूल और सब्जियाँ उगाने के लिए हॉर्टिकल्चर फ़ार्म स्थापित करके बागवानी उद्यमी बन सकते हैं।

बागवानी संबंधित प्रक्रियाएं

1. रोपण के लिए मिट्टी तैयार करना - आपको मिट्टी के प्रकार को निर्धारित करना होगा और उसका मिश्रण बनाने की प्रक्रिया / योजना तैयार करनी पड़ेगी। मिट्टी में पानी रुकता तो है, परन्तु अच्छी तरह से बहता नहीं है। यह अक्सर काफी क्षारीय होती है और उसे प्रयोग में लाने योग्य बनाने के लिए काफी मात्रा में जैविक / कार्बनिक पदार्थों को मिलाना पडता है। रेतीली मिट्टी अच्छी तरह से बह जायेगी लेकिन उसको लगातार पानी देने (सिंचाई) की आवश्यकता होती है। इस मिट्टी को उपयोगी (सुधारने) बनाने के लिए भी कार्बनिक पदार्थों को मिलाने की आवश्यकता होगी होती है।

2. बीजों का चयन - बीज हमेशा प्रसिद्ध बीज कम्पनी से ही खरीदें। आप अपने घर पर उपलब्ध बीजों का भी चयन कर सकते हो। आप एक ऐसी किस्म का चयन करें जो आपके यहां की जलवायु में अच्छी उपज दे सके। जब आप बीज का चयन कर लें तो यह सुनिश्चित करें कि आपके बीज निम्नलिखित बातों से मुक्त हों जैसे -

→ हल्के

→ धब्बे

→ जंग

→ एफिडस

→ कृमि (कीड़े)

→ विषाणु

3. बीजों की बुवाई / बीज बोना - इसकी बुवाई के समय न ज्यादा ठंडा और न ज्यादा नमी हो। नियमानुसार, सैद्धांतिक रूप से अधिकतर प्रजातियों के बीज (लेकिन सभी नहीं) सामान्यतया हल्के तापमान में काफी अच्छी तरह से अंकुरित होते हैं। नमी जरुरी है-नियमानुसार/सैद्धांतिक रूप से अधिकांश बीजों का अंकुरण और वृद्धि (विकास) मिट्टी को थोडा नम (मिट्टी छूने पर नम लगे) रखने पर ज्यादा निर्भर करता है। सफल अंकुरण के लिए नमी तथा प्रकाश की तीव्रता भी महत्वपूर्ण है। गहराई और दूरी भी आवश्यक है- बीज को काफी गहराई में बोना एक नौसिखिए की बहुत बड़ी गलती हो सकती है। वृद्धि के लिए उपलब्ध स्थान का विचार अवश्य कीजिए। यदि आपका बगीचा छोटा है तो उसके लिए झाडी, कम्पोस्ट या फिर बर्तन (गमले) में उगने वाली किस्मों को ही विकसित करें।

4. पानी देना/सिंचाई (Watering) - पौधों को नियमित रूप से पानी दीजिए। गर्मी के मौसम में आप दिन में कम से कम एक बार पानी अवश्य दें। गर्मी के मौसम में पौधों में पानी की मात्रा की क्षति कुछ ज्यादा होती है और वे मुरझा सकते हैं या फिर उनकी वृद्धि रुक सकती है यदि उन्हें पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं दिया जाय। पानी की मात्रा के संबंध में हम किसी को पुष्प प्रजातियों और उन्हें कितनी मात्रा में पानी की आवश्यकता होगी, इस पर विचार करने की जरुरत होगी। अन्य दूसरे कारक जिन पर भी

आपको विचार करना होगा उनमें बगीचे की मिट्टी किस तरह की है और उस क्षेत्र में कितनी वर्षा होती है। ज्यादा मात्रा में पानी देना या फिर पानी देने के गलत तरीकों से भी पौधों को कवकीय/फफूंद जैसे रोग लगने की संभावना होती है।

5. उर्वरक / खाद डालना - समय के साथ बगीचे की उर्वरता कम हो जाती है और पौधों के लिए पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। जब भी आप यह ध्यान दें कि मृदा की उर्वर शक्ति क्षीण (कम) हो रही है तो आपको उस मृदा में तुरंत उपयुक्त उर्वरक डालना चाहिये। फूल वाले पौधों (फूलों) के लिए पानी में घुलनशील या फिर तरल उर्वरक का प्रयोग करना अच्छा होता है। कुछ उर्वरक पौधों को झुलसा भी सकते हैं। अतः इस परेशानी से बचने के लिए उर्वरक निर्माता द्वारा बताए गये दिशा-निर्देशों का पालन करना जरुरी हो जाता है। सही उर्वरक का चयन करने के लिए मिट्टी के परीक्षण की मदद ले सकते हैं। जैविक उर्वरक को मिट्टी से मिलने में काफी समय लग जाता है। परंतु जैसे-जैसे समय बीतता है, वे स्वस्थ मृदा का निर्माण करते हैं।

6. पतवारण (मल्च बनाना) - मल्स (पतवार) एक ऐसी वस्तु है जिसे मृदा की सतह पर फैलाकर या फिर बिछा कर रखा जाता है। यह मृदा में नमी बनाए रखने, अपहण (घास - पात) को कम करने, मिट्टी को ठंडा रखने, मृदा अपरदन को रोकने और पोषक तत्वों को मिलाने के काम आता है। मल्च के लिए उन वस्तुओं को चुने जिनसे पौधों की सुंदरता खराब न हो/करें। कुछ सुझावित मल्च के घास, पत्तियां, लकड़ी के तख्ते (चिप्स) और पोलीथिन पेपर शामिल है।

7. खरपतवार को हटाना - खरपतवार मिट्टी में उपस्थित पोषक तत्वों के लिए उपयोगी/लाभकारी पौधों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। इसके अलावा वे कीटों और बीमारियों द्वारा भी परेशान कर सकते हैं। बड़े बगीचे / उद्यान के लिए आपको कुदाल और खोदनी (गेंती) जैसे बागवानी में प्रयुक्त होने वाले औजारों का प्रयोग करना आवश्यक होगा। प्रत्येक एक हफ्ते बाद खरपतवार को हटाना आवश्यक है।

8. पौधों को पर्याप्त सूर्य का प्रकाश (धूप) उपलब्ध करायें - सूर्य का प्रकाश पौधों के लिए ऊर्जा का स्त्रोत है। इसीलिए आप सुनिश्चित करें कि पौधों को पर्याप्त मात्रा में सूर्य का प्रकाश उपलब्ध हो रहा है। कुछ पौधों को प्रतिदिन काफी घंटों तक सूर्य के प्रकाश की जरुरत होती है। जबकि दूसरे उदाहरण स्वरूप दूसरे पौधे जैसे घर के भीतर के पौधों को कुछ घंटों के प्रकाश की आवश्यकता होती है। इसीलिए आपको जानने की आवश्यकता है कि आप यह सुनिश्चित करें कि पौधों को आवश्यक प्रकाश (रोशनी) उपलब्ध हो रही है।

9. पीड़को (कीटों) की रोकथाम (निवारण) और नियंत्रण - पीड़क (कीट) आसानी से पौधों को मार सकते हैं इसीलिए यह जरुरी है कि बगीचे को उनके हमले से बचाया जाए। आप कुछ पीड़कों और कुछ खरपतवारों को अपने बगीचे से जाल जैसे बंधकों (बंधनों) द्वारा रोक सकते हैं। यदि पौधों पर पीड़कों द्वारा हमला किया जाता है तो उन हानिकारक जीवों को मारने के लिए किसी एक उपयुक्त पीड़कनाशक (कीटनाशक) का उपयोग करने की आवश्यकता पडेगी।

10. रोगों की रोकथाम और नियंत्रण - पीड़कों (कीटों) की तरह रोग भी फूलों के लिए काफी हानिकारक होते हैं। अधिकांश पादप रोग कवकों (फफूंद), जीवाणु (बैक्टीरिया) और विषाणु (वायरस) से होते हैं। आप कवकीय रोगों (फंगल रोगों) को बगीचे में पानी के अत्याधिक प्रयोग और बगीचे की निराई और छंटाई जैसे तकनीकों के प्रयोग से बच सकते हैं।

11. पौधों की जानवरों से सुरक्षा - कुछ जानवर जैसे गाय और बकरी पत्ते खाकर पौधों को नुकसान पहुँचाते हैं। अन्य जानवर जैसे कुत्ते और बिल्लियाँ भी बगीचे के पौधों को नष्ट कर सकते हैं। अपने बगीचे को जानवरों से बचाने के लिए बाड़ लगाना या फिर बाधा (कंटीले तार) लगा सकते हैं।

12. पौधों की कटाई और छंटाई - पौधे के तने की पार्श्व वृद्धि को बढ़ाने के लिए उसके शीर्ष (सिरों) को हटाने और उसके आकार को बढ़ाने की प्रक्रिया है। शाखाओं की वृद्धि को बढ़ाने के लिए और अधिक फूल उगाने के लिए कटाई-छंटाई प्रक्रिया को बढ़ावा देते है।

13. पौधे को छितराना और काटना - छंटाई करने की प्रक्रिया के शेष पौधे में वृद्धि के लिए अतिरिक्त पौधों को हटाने का कार्य किया जाता है। दूसरी ओर तोड़ना (चुनना) क्रिया के अंतर्गत अवांछनीय पौधों को हटाने की प्रक्रिया (जिसमें शामिल है - कमजोर, पीडित या रोगी) में शेष पौधों को विकसित होने का ज्यादा अवसर या पीड़कों को नियंत्रित किया जाता है।

14. पौधों को सहारा देना (बांधना) - स्टेकिंग (बांधना) पौधों के तनों को सहारा प्रदान करने के लिए किया जाता है। इससे एक आरोही रॉड/छड़ को भूमि में स्थिर किया जाता है और उसे तने पर बांध दिया जाता है। यह कमजोर तने वाले पौधों में किया जाता है या जहाँ पर पौधों को किसी निश्चित दिशा में जाना हो।

15. पौधे के बेकार भागों को हटाना (निर्गमन) - पौधे के बेकार भाग हटाना (डेड हेंडिंग) वह प्रक्रिया है जिससे पुराने या मृत (मुरझाये) फूलों को पौधे से अलग करके फुलवारी को अधिक खिलने के लिए प्रोत्साहित करना है। इससे पौधों को स्वस्थ्य रखने में मदद मिलती है।

16. मृदा का बदलना (प्रति स्थापन) - मिट्टी समय के साथ अपनी (उर्वरता) भौतिक गुण खो देती है। पौधों के सतत् विकास (वृद्धि) के लिए उसकी क्षमता भी कम हो जाती है। इसीलिए समय समय पर मिट्टी को बदलते रहना भी जरुरी है।

सुमन शर्मा, अतिथि रचनाकार

चाहत

तुम्हीं थे चाहत, तुम्हीं थे जीवन
तुम्हीं से था ये पर आँगन मधुबन।

तुम्हें समर्पण, तुम्ही पे अर्पण,
तुम्हीं हो मेरी यादों का दर्पण।

तुम्हारी यादों में है ये मन उपवन,
काश ना टूटता ये प्यारा बंधन।

कर्म गति थी तुम्हारी महान,
करते तुमको नित अभिनन्दन।

रखते सबसे मधुर बंधन,
देते सदा स्नेह निमंत्रण।

काश मिल जाता वो जहान,
जहाँ भरते उड़ान तो लौट के आता इंसान।

लिखी जीवन के अनुभवों की दास्तानं,
मिला समर्पित सेवा का ईनाम।

रूचि गुप्ता, लेखापरीक्षा लिपिक

समाज की रस्में

मुरझाई सी सूरत, दो नयन कमल लिए ताक रही।
झीनी सी घूंघट की ओट से, बाहर वो झांक रही।।
आते जाते लोग बैठे है ऐसे पंगत में।
जैसे भोज पर वानर बैठे हो संगत में।।
पचास का जनमा, पूड़ी नरम मांग रहा।
बेटे की उमर का था, ये भी उसे न भान रहा।।
देख ये दृश्य, उसकी आंखों से अश्रु सैलाब पिघल गया।
बेटे के मौसर का निवाला, कैसे वो निगल गया।।
बहुत समझाया करती थी, सजन जी नही पीना है।
मेरे लिए न सही, इन जिगर के टुकड़ों के लिए जीना है।।
मर्ज ऐसा लगा सजन को, बचाने के लिए सर्वस्व झोंक दिया।
रुपए, बच्चो का बचपन, खिलोने, घर यहां तक कि खुद को तक फूंक दिया।।
कुछ दस, ग्यारह दिन पहले ऐसी कुछ बात हुई।
मेरी और जिगर के टुकड़ों की, सजन से फिर न मुलाकात हुई।।
रिश्ते, नाते, रूठना, मनाना, वादे सब पीछे छूट गए।
कुठाराघात था नियति का, जो सजन मुझसे रूठ गए।।
पगड़ी, दाढ़ी और मूंछ वालो का हुजूम उमड़ आया।
चार बरस के लाल को, उन सबके बीच में पाया।।
श्वेत, रक्त वर्ण की, पाग उसके सर रख दी जाती है।
ये देख निष्ठुर नियति, को दया भी नही आती है।।
कुछ ग्राम वजन की इस पगड़ी को, कैसे वो संभाल पाएगा।
समाज और नियति के दो पाटों के बीच, वो पीसता चला जायेगा।।
रश्म पगड़ी की पूरी हुई, अब रुपए कुछ दस, बीस आशीर्वाद में पाएगा।
आशीर्वाद तो ठीक है, मगर ये ऋण कैसे चुका पाएगा।।
कुछ लाख सवा दो, खर्च करवा दिए इन रस्मों रीवाज़ो पर।
अब पाई पाई मांगने आयेगा साहूकार, घर के दरवाजों पर।।
घर के दरवाजे भी तो गिरवी रख दिए इन रस्मों रीवाज़ो पर।
कहां मझधार में छोड़ गया वो, जो दौड़ा चला आता था बच्चो की आवाज़ों पर।।
दरवाजे पर खड़ा साहूकार, मूल और सूद को एक साथ गिनाएगा।
मैं बस इतना बोलूंगी "कुछ दिन की मोहलत दो, कर्जा सारा चूक जायेगा"।।
टकटकी सी नजरों से, मंजर सारा उसने देख लिया।
कुंआ, रस्सी, जहर, नही, नही, ये क्या मैने सोच लिया।।
आंसू उसने पोंछे, और हाथ बड़ी बच्ची के सर पर रख दिया।
इतने में निगल निवाले, पचास का जनमा भी उठ गया।।

एक वक्त खा लूंगी, बेशक बच्चो को कम पढ़ाऊंगी ।
मगर समाज की ये रस्में निभाऊंगी, रस्में जरूर निभाऊंगी।।
रस्में जरूर निभाऊंगी ।
रस्में ज़रूर निभाऊंगी ।।

भाग-II

एक तरफ सजन रूठ गए. तो दूजे छोर समाज रस्मों-रीवाज़ों पर अड़ा था।
अंदर खेल रही थी भूख बच्चो के संग, तो दरवाजे पर साहूकार खड़ा था।।
खेलते देख उदासी के आंचल में बचपन को, आंख भर आती है।
दोष क्या था मेरा और इन अभागो का, नियति ये क्यूँ नहीं मुझे बताती है।।
बरस एक चौथाई बीत गया, घर का राशन सारा रीत गया।
दुःख, अभाव, पीड़ा, दया, करूणा, ये सब मिले जब से मीत गया।।
उमर चालीस, बच्चे चार, गीली आंखे,खाली बर्तन, ये ही अब इस जीवन का सार।
दृश्य उभर आये सारे, जब मना किया करती थी सजन को बारम्बार।।
पहली रोटी गाय की, आखिरी रोटी कुत्ते के हिस्से की आती है।
बंद हुआ ये सब भी, क्यूंकि बच्चों की भूख अब बहुत डराती है।।
स्वजनो का आना बंद हुआ, अब तो केवल साहूकार चौखट पर आता है।
साहूकार नहीं ये तो यम का दूत हुआ, सोचकर मन बड़ा घबराता है।।
दुःख के तराजू में बराबर बैठकर, नीलामी के संग तौली गई हूँ।
दुःखयारी, अनाथा, पतिहिना, अपशगुनी इन्ही शब्दों से बोली गई हूँ।।
कजरी के इस पहाड़ पर, हर पल, हर वक़्त-बेवक़्त अकेली गई हूँ।
शुभ नहीं रही अब मैं, तो शुभ काज के वक़्त दूर धकेली गई हूँ।।
आत्मसम्मान के मोम को, अभाव और अलगाव की लौ में पिघलते देख रही हूँ।
लाडलों के सुनहरे कल के लिए ही, पीड़ा को ममता के आंचल पर सेंक रही हूँ।।
जनकसुता से भी बड़ी अग्निपरीक्षा मेरी, उनको तो वाल्मीकि का भी आशीर्वाद मिला।
रंक, हीनता, वियोजन, वेदना ये सब एकाकी में मुझे निर्विवाद मिला।।
बंदिशे न तोड़ पाई समाज की, कैसे मैं ये सब रस्मे मान गई।
सोचते सोचते हलक सूखे, अब तो मानो जान गई।।
देह से जान गई तो रस्मो से ज़िंदा लाश बनी मैं, अब सबकुछ जान गई।
लड़ूंगी मैं अब से, हूँ बेटी माँ जानकी की, खुद को मैं अब पहचान गई।।
उस दिन ही तो लड़ना था, जाने क्यों मैं मौन रही।
अब लड़ूंगी, मैं लड़ूंगी, दसों दिशाओं से कुंठा बोल रही।।
कुंठा को प्रेम के आंचल तले, मेहनत के पसीने से सिचूंगी।
समाज की रस्मे निभाने से पहले मुठ्ठियाँ अपनी भिचूंगी।।

अशोक कुमार वर्मा, डी.ई.ओ.

ग्लोबल वॉर्मिंग

(1) भूमंडलीय उष्मीकरण (ग्लोबल वॉर्मिंग) का अर्थ:- भूमण्डलीय उष्मीकरण 'ग्लोबल वॉर्मिंग' से तात्पर्य है कि पृथ्वी की निकटस्थ- सतह वायु और महासागर के औसत तापमान में 20वीं शताब्दी से हो रही वृद्धि और उसकी अनुमानित निरंतरता है। पृथ्वी की सतह के निकट विश्व की वायु के औसत तापमान में 2005 तक 100 वर्षों के दौरान 0-74# (6) 0.18°C (1.33+0.32F) की वृद्धि हुई है। ये आकड़ें जलवायु परिवर्तन पर बैठे अंतर सरकार पैनल (intergovermment panel on climate change) (IPCC) ने निष्कर्ष निकाल कर उपलब्ध कराये है। IPCC ने यह भी निष्कर्ष निकाला की 20 वीं शताब्दी के मध्य से औसतन तापमान में जो वृद्धी हुई है उसका मुख्य कारण “एट्रोपोजेनिक” (मनुष्य द्वारा निर्मित) “ग्रीन हाउस” (green house gas) गैसों की अधिक मात्रा के कारण हुआ है।

IPCC द्वारा सागर गर्भित जलवायु प्रतिमान के प्रतिरुपेण इंगित करते हैं कि धरातल का औसत ग्लोबल तापमान 21वीं शताब्दी के दौरान और अधिक बढ़ सकता है। भले ही ग्रीन हाउस गैस के स्तर स्थिर हो जाएं तब भी वॉर्मिंग तथा समुद्र के स्तर में वृद्धि होने की लगातार संभावना की जाती है। भूमण्डलीय अभीकरण से सारे संसार के तापमान में वृद्धि होने से समुद्र के स्तर में वृद्धि, मौसम की तीव्रता में वृद्धि और अवक्षेपण की मात्रा और अवक्षेपण की मात्र और रचना मे महत्त्वपूर्ण बदलाव आ सकता है। ग्लोबल वॉर्मिंग के अन्य प्रभावों में कृषि उपज में परिवर्तन, व्यापार मार्गो में संशोधन, ग्लेशियर का पीघलना, प्रजाति विलोपन और बीमारियों में वृद्धि आदि शामिल हैं।

(2) "ग्लोबल वॉर्मिंग से आशय:- सही मायनों में देखा जाएं तो ग्लोबल वॉर्मिंग से आशय है कि हाल ही के दशकों में हुई वॉर्मिंग और इसके निरंतर बने रहने के अनुमान और इसके अप्रत्यक्ष रूप से मानव पर पड़ने वाले प्रभाव से है। बढ़ते तापमान ही एकमात्र प्रभाव नहीं है यह शब्द “एन्टरोपोजेनिक” ग्लोबल वॉर्मिंग कई बार उस समय प्रयोग किया जाता है, जब मानव प्रेरित परिवर्तन पर ध्यान केन्द्रित होता है।

(3) भूमंडलीय उष्मीकरण (ग्लोबल वॉर्मिंग) के कारण:- पृथ्वी की जलवायु बाहरी दबाव के चलते परिवर्तित होती रहती है जिसमे सूर्य के चारों ओर इसके अपनी कक्ष में होने वाले परिवर्तन भी शामिल है। कक्ष पर पड़ने वाले दबाव सौर चमक, ज्वाला मुखी उद्गार तथा वायुमण्डलीय ग्रीन हाउस गैसो के अभिकेंद्रण का भी परिवर्तन करता है। धरती के महासागरों का ताप जड़त्व और कई अपत्यक्ष प्रभावों की आज ग्रीनहाउस गैसों को 2000 स्तर पर स्थिर कर दिया जाए तो इससे आगे बहुत गर्मी दिखेगी और भूमंडलीय उष्मीकरण में सहायक बनेगी। ग्लोबल वॉर्मिंग के कारणों में प्रमुख कारण औद्योगिकीकरण है। आज उद्योगों से निकलेनी वाली हानिकारक गैसे जैसे- कार्बनडाई ऑक्साइड, मीथेन गैस आदि पर्यावरण (ग्लोबल वॉर्मिंग) का महत्वपूर्ण घटक है। एक और महत्वपूर्ण घटक है- आइस अल्वेडो प्रत्युत्तर"। जब वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है तब ध्रुवों के पास बर्फ तेज दर से पिघलने लगती है, वैसे-वैसे भूमि अथवा खुला जल उसका स्थान ले लेता है। भूमि और जल दोनो ही बर्फ की तुलना में कम परावर्तक होते है और इसलिए सौर विकिरण को अधिक मात्रा

में सोख लेते है इससे अधिक गर्मी हो जाती है जिसके कारण और अधिक बर्फ पिघलने लगती है तथा यही चक्र भूमण्डलीय उष्मीकरण के सहायक का कार्य करता है।

(4) भौतिक विकास और ग्लोबल वार्मिंग का मानव जीवन पर अप्रेक्षित व आशातीत प्रभाव:- आज विश्व में सारे देश एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ कर रहे हैं। आज अपना भौतिक विकास व वर्चस्व को बढ़ाने के लिए अंधाधुंध ग्लोबल वॉर्मिंग (पर्यावरण) के क्षय होने के कार्य, विकास के लालच में जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण के कार्य कर रहे हैं। आज औद्योगिकीकरण के कारण कचरा, मल निष्कासन से तालाब, नदियों का जल दूषित होना प्राकृतिक सौन्दर्य का क्षय, ऋतु विपर्यय के अतिरिक्त अंधत्व, अपंगता आदि ग्लोबल वार्मिंग का ही प्रभाव है। भूमण्डलीय उष्मीकरण के कारण बेमौसमी बरसात, कभी अति वृष्टि, अनावृष्टि, तो कभी अल्पवृष्टि और कभी ओंलो की मार से खलिहान नष्ट हो रहे है। भू-क्षरण, पर्वत स्खलन, प्राकृतिक सौन्दर्य का क्षय, ऋतु विपर्यय, आदि ग्लोबल वॉर्मिग का ही प्रभाव है। इसी प्रकार दशा रही तो आने वाले दो दशको में धरती का तापमान 0.3/ डिग्री सेल्सियस की दर से बढ़ेगा, जिसका विश्व पर गहरा प्रभाव पड़ेगा तापमान और जलवायु प्रदूषण की वृद्धि से सागर के आसपास रहने वाले जलस्तर के ऊपर उठने से जल में डूब जायेंगे। ग्रीन हाउस गैसों में वृद्धि के कारण औसत तापमान 5° सेन्टी. से बढ़कर 9 सेन्टी. हो गया। मुक्त विश्व विद्यालय से संकेत मिले हैं कि वॉर्मिंग के कारण चट्टानों की अपक्षय दर (Weathering) 400% तक बढ़ गई। इस तरह का अपक्षय कार्बन को कैल्सीटर और डोलोमाइट में मिश्रित कर देती है जो मानव के लिए हानिकारक है।

यद्यपि विशेष मौसम घटनाओं को ग्लोबल वॉर्मिंग से जोड़ना मुश्किल है फिर भी विश्व के तापमान में वृद्धि से व्यापक परिवर्तन सहित बर्फ का पीघलना, आर्कटिक और दुनिया भर में समुद्र के स्तर में वृद्धि, अवक्षेपण की मात्रा में परिवर्तन बाढ़ और सूखे को जन्म दे सकता है। मौसम की घटनाओं की आवृत्ति एवं तीव्रता में भी परिवर्तन हो सकते है। अन्य प्रभावों में कृषि पैदावार में कमी, व्यापार के नए मार्गो का जुड़ना, छोटी ग्लोबल वॉर्मिंग के तहत मानव जीवन पर प्रभावों IPCC की एक रिपोर्ट के अनुसार ग्लेशियर का पीघलना, बर्फ का खत्म होना, समुद्र के तापमान का बढ़ना, बारिश में परिवर्तन और खराब मौसम ग्लोबल वार्मिव के कारण माने जा रहे हैं। अन्य प्रभावों में पानी की कमी, क्षेत्र अवक्षेपण का बढ़ना पर्वत स्खलन और गरम मौसम के कारण स्वास्थ्य के प्रतिकूल प्रभाव, बढ़ती हुई मौतें और आर्थिक नुकसान, अतिवादी मौसम और बढ़ती हुई जनसंख्या आदि है। इसके साथ ही, कुछ संभावित असर/प्रभाव है समुद्रों का और महासागरों के PH का नीचा होना, खेती पर असर, ओजोन परत में कमी, चक्रवातों और खराब मौसम की तीव्रता में बढ़ावा मलेरिया और डेंगू बुखार जैसी बीमारियों का फैलना। एक अध्ययन के अनुसार 2050 तक 18%/35%/- तक पशु और पौधों की प्रजातियां विलुप्त हो जाएगी। ग्लोबल वार्मिंग से भौगोलिक क्षमता तथा उनकी प्रचंडता में वृद्धि होने की आशा है। कुछ शोधकर्ताओं ने पाया की सूर्य की चमक में पिछले 1000 सालों से कोई परिवर्तन नहीं आया है। सौर चक्र (solar cycle) के कारण पिछले 30 सालों में केवल 0-07 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई है।

(5) भूमण्डलीय उष्मीकरण (ग्लोबल वॉर्मिंग) तथा वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसें:- हाउस प्रभाव की खोज 1824 में जोसेफ फोरिमार द्वारा की गई तथा 1896 में पहली बार स्वेन्टी आरहेनेस द्वारा मात्रात्मक जाँच की गई थी। मुद्दा यह है कि मानवीय गतिविधियों से जब कुछ ग्रीनहाउस गैसों की वायुमंडलीय साद्रता बढ़ती है तब ग्रीन हाउस प्रभाव की शक्ति कैसे परिवर्तित होती है। औद्योगिक क्रांति के बाद से मानवी गतिविधि में वृद्धि हुई है। जिसके कारण ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा में बहुत ज्यादा वृद्धि हुई है। इसके कारण विकरणशील मीथेन, ओजोन, सीएफसी और नाइट्रोजन भी बहुत बढ़ गए हैं। अगर अणु की दृष्टि से देखें तो मीथेन ग्रीन हाउस गैस कार्बनडाई ऑक्साईड की तुलना में अधिक प्रभावी है। इस प्रकार भूमण्डलीय उष्मीकरण (ग्लोबल वॉर्मिंग) में ग्रीनहाउस गैसे बहुत ही प्रभावकारी है।

(6) भूमण्डलीय उष्मीकरण को (ग्लोबल वार्मिंग) रोकने के उपाय:- आज भूमण्डलीय - उष्मीकरण को रोकने के लिए हर मानव मात्र को अपना प्रयास करना होगा। बढ़ती जनसंख्या पर अकुंश, अत्यधिक यातायात वाहनों का प्रयोग वर्जित करना होगा तथा प्रकृति से छेड़छाड़ अर्थात अंधाधुंध पेड़ों की कटाई रोकनी होगी,। नए पेड़-पौधे सृजित करने होंगे। पेड़ों की हानि से ओजोन परत को अति नुकसान हो रहा है। उसे भी रोकना है। इसके साथ ही, मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है, अतः अपने विवेक से उसे ऐसे और अनेक उपाय करने होंगे जो की भूमंडलीय उष्मीकरण रोकने में सहायक बिंदु हो सके।

राम नारायण, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर की राजभाषा अनुभाग द्वारा वर्ष 2021-22 में किए गए हिंदी सम्बन्धित कार्यों का विवरण

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है। इस वर्ष कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर में लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है उसका विवरण निम्न प्रकार हैः-

- **राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) की अनुपालनाः**- राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अन्तर्गत कुल 262 दस्तावेज जारी किए गए । कोई भी दस्तावेज केवल अंग्रेजी में जारी नहीं किया गया । इस प्रकार वर्ष 2021-22 में इस धारा की शत प्रतिशत अनुपालना हुई ।
- **पत्राचार**ः- राजभाषा नियम 5 के अन्तर्गत इस कार्यालय में कुल 9134 पत्र हिन्दी में प्राप्त हुए। इसमें से 4323 पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया गया। शेष पत्रों का उत्तर दिया जाना अपेक्षित नही था।
- **राजभाषा कार्यान्वयन समितिः**- तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा करने तथा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में आने वाली कठिनाईयों पर विचार करके महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए कार्यालय में राजभाषा कार्यान्यवन समिति का गठन किया हुआ है। वर्ष 2021-22 में राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम की अनुपालना में विभागीय राजभाषा कार्यान्यवन समिति की 04 बैठकें व 04 हिन्दी संगोष्ठियां आयोजित की गई ।
- **हिन्दी समारोह का आयोजनः**- सरकारी कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने तथा उसके उत्तरोतर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 14 सितम्बर, 2022 से 29 सितम्बर, 2022 तक हिन्दी समारोह का आयोजन किया गया । समारोह के दौरान अनेक कार्यक्रमों व प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।
- **नगर राजभाषा कार्यान्यवन समितिः-** वर्ष 2021-22 में समिति की दो अर्धवार्षिक बैठकों में लेखापरीक्षा कार्यालय से कार्यालय प्रमुख एवं प्रशासनिक प्रधान ने भाग लिया ।
- **राजभाषा पत्रिकाः**- वर्ष 2021-22 के दौरान वार्षिक पत्रिका "**मरूधरा**" के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया गया।
- **यूनीकोड प्रशिक्षणः**- राजभाषा अनुभाग (लेखापरीक्षा-II) द्वारा कार्यालय में उपलब्ध संसाधनों की सहायता से आवश्यकता के अनुसार सहायक लेखापरीक्षा अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया।
- **हिंदी प्रोत्साहन योजना:-** वर्ष 2021-22 के दौरान हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहन स्वरूप राशि एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

राजभाषा अनुभाग (लेखापरीक्षा-II)

कार्यालय की पत्रिका "मरूधरा" हेतु पाठकों के अभिमत

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में वार्षिक ई-पत्रिका "मरुधरा" के द्वितीय अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, अतः आपको सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। श्रीमती लवली शर्मा की कविता ''जीवन साथी'' एवं श्री रवि शंकर विजय, वरिष्ठ लेखा परीक्षक की कविता ''गीत'' अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास) नई दिल्ली

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका ''मरुधरा'' का द्वितीय अंक (जनवरी से दिसम्बर 2021) अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ आपको धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। इसके अलावा श्रीमती शिवपाली खण्डेलवाल, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी द्वारा रचित लेख 'डाकघर बचत बैंक' ज्ञानवर्धक लगी।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा रेल सदन, भुवनेश्वर, उड़ीसा

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका 'मरुधरा' के द्वितीय अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड, बेंगलूर

पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रुप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की हिन्दी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक़), बिहार, पटना

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका ''मरुधरा'' के द्वितीय अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ आपको धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका के इस अंक में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय हैं। इस अंक में संकलित कार्यालय उपयोग हेतु द्विभाषी शब्दावली का संग्रह अत्यंत ज्ञानवर्धक है।

महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री रवि शंकर विजय, वरिष्ठ लेखा परीक्षक का 'गीत-महाप्रलय तो होगी', श्री रामानन्द शर्मा, अतिथि रचनाकार का लेख 'राजकुमारी' तथा श्री रोहित शर्मा, अतिथि रचनाकार की कविता 'जिन्दगी कभी' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) महाराष्ट्र, नागपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका ''मरुधरा'' के द्वितीय अंक प्राप्त हुआ, अतः आपको सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय पठनीय एवं संग्रहणीय है तथा राजभाषा के उतरोत्तर प्रगति हेतु सार्थक प्रयास है।

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक़), उत्तराखंड, देहरादून

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका ''मरुधरा'' के द्वितीय अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाले हैं। इनमें जो रचनाएँ अति उतम लगीं वो हैं- नौकरी के साथ परीक्षा की तैयारी, भारतीय मिष्ठान जलेबी, जीवन साथी, जिन्दगी कभी आदि।

कार्यालय प्रधान महालेखार, लेखा परीक्षा-II पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'मरुधरा' के द्वितीय अंक (जनवरी से दिसम्बर 2021) की प्रति ई-मेल द्वारा प्राप्त हुई जिसके के लिए आपको बधाई एवं धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं उच्च कोटि की हैं। 'राजभाषा नियम, 1976 (यथा संशोधित, 1987,2007 तथा 2011), 'मां की यादें', 'जन-लेखा समिति की प्रक्रिया', 'शुभाशीष', 'सेवा का संदेश' तथा 'पारस मणि' आदि रचनाएं विशेष रुप से अत्यंत रोचक एवं सराहनीय हैं। सभी रचनाकारों को साधुवाद।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा

आपके कार्यालय की हिंदी वार्षिक गृह पत्रिका ''मरुधरा'' की द्वितीय अंक की सहर्ष प्राप्ति हुई है। श्री सुनील कुमार अग्रवाल द्वारा रचित ''मां की यादें'' वास्तवमुखी है, श्री रामानंद शर्मा द्वारा रचित ''राजकुमारी'' लेख अत्यंत व्यथाग्रस्थ एवं मार्मिक है, श्री शंकर लाल सीमावत द्वारा रचित ''सेवा का संदेश'' प्रशंसनीय हैं। आपके कार्यालय पत्रिका निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, इसी शुभकामना सहित आपकी पत्रिका ''मरुधरा'' के उज्ज्वल भविष्य हेतु ''नवीन पूर्वांचल संदेश'' परिवार की और से हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (ले. व. ह.) मेघालय, शिलांग

हिन्दी पखवाड़ा - 2022 को आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता

हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	कार्यालय का नाम	परिणाम
1.	श्री अमित गोयल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर	प्रथम
2.	श्री मोहित कुमार	बहु कार्य कर्मचारी	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर	द्वितीय
3.	श्री विक्रम भारती	लेखापरीक्षा लिपिक	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर	तृतीय

हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	कार्यालय का नाम	परिणाम
1.	श्रीमती रंजना भण्डारी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (के.) अहमदाबाद, शाखा कार्यालय जयपुर	प्रथम
2.	श्री मनोज कुमार	लेखाकार	कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक़.) राजस्थान, जयपुर	द्वितीय
3.	सुश्री प्रियंका चुण्डावत	बहु कार्य कर्मचारी	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर	तृतीय

हिंदी स्व-रचित काव्यपाठ प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	कार्यालय का नाम	परिणाम
1.	सुश्री सुमित्रा	बहु कार्य कर्मचारी	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर	प्रथम
2.	श्री राहुल शर्मा-II	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (के.) अहमदाबाद, शाखा कार्यालय जयपुर	द्वितीय
3.	श्री किशोर कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर	तृतीय

हिंदी श्रुति एवं सुलेख प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	कार्यालय का नाम	परिणाम
1.	श्री रवि शंकर विजय	सहायक पर्यवेक्षक	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर	प्रथम
2.	श्री अनिल कुमार जैन	सहायक लेखाधिकारी	कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक़.) राजस्थान, जयपुर	द्वितीय
3.	श्री भगवान दास	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर	तृतीय

हिंदी टिप्पण - प्रारूपण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	कार्यालय का नाम	परिणाम
1.	श्री राजीव भाटिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर	प्रथम
2.	श्री राव जीतेन्द्र प्रसाद	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (के.) अहमदाबाद, शाखा कार्यालय जयपुर	द्वितीय
3.	श्री दिनेश चन्द्र डिग्गीवाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (के.) अहमदाबाद, शाखा कार्यालय जयपुर	तृतीय

हिंदी लघु कथा लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	कार्यालय का नाम	परिणाम
1.	श्री हनुमान गुप्ता	सहायक लेखाधिकारी	कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक़.) राजस्थान, जयपुर	प्रथम
2.	श्री अशोक कुमार वर्मा-II	डेटा एन्ट्री ऑपरेटर	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर	द्वितीय
3.	सुश्री प्रिया सैनी-II	लेखापरीक्षक	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर	तृतीय

गणतंत्र तथा स्वतंत्र दिवस की अनुपम झलकियाँ

लेखापरीक्षा सप्ताह समारोह - 2022 की मनमोहक झलकियाँ

ऑडिट सप्ताह
२१–२५ नवम्बर २०२२
AUDIT WEEK
21-25 NOVEMBER 2022

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%

11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	40%	30%	20%
			(न्यूनतम अनुभाग)	
			सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।	

विदेशों में स्थित भारतीय कार्यालयों के लिए कार्यक्रम

(क) हिंदी में पत्राचार (भारत/विदेश में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ)	50%
(ख) फाइलों पर हिंदी में टिप्पण	50%
(ग) वर्ष के दौरान नराकास की बैठकों की संख्या (नराकास का गठन किसी नगर में केंद्र सरकार के 7 कार्यालय या अधिक होने की स्थिति में किया जाए)	प्रत्येक वर्ष में एक बैठक
(घ) वर्ष के दौरान विराकास (विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति) की बैठकों की संख्या (विराकास का गठन कार्यालय-अध्यक्ष की अध्यक्षता में किया जाए)	प्रत्येक तिमाही में एक बैठक
(ङ.) कंप्यूटरों सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी उपलब्धता	100%
(च) हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी/आशुलिपिक	प्रत्येक कार्यालय में कम से कम एक
(छ) दुभाषिए की व्यवस्था	प्रत्येक मिशन/दूतावास में स्थानीय भाषा से हिंदी में और हिंदी से स्थानीय भाषा में अनुवाद के लिए दुभाषिए की व्यवस्था की जाए।

कार्यालय उपयोग हेतु द्विभाषी शब्दावली संग्रह

क्र.स.	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी अर्थ
1	Abstract sheet	सार पत्रक
2	Alibi	अन्यत्र होने का साक्ष्य
3	Blanket deal	व्यापक सौदा
4	Bottleneck	बाधा, गत्यावरोध
5	Casting vote	निर्णायक मत
6	Composite culture	सामासिक संस्कृति
7	Cultural agreement	सांस्कृतिक करार
8	Defalcation	गबन
9	Diglot edition	द्विभाषी संस्करण
10	Enumeration	गणना, गिनने का कार्य
11	Festival advance	त्यौहार अग्रिम
12	Gratis	निशुल्क, मुफ्त
13	Handbill	पर्चा, इश्तहार
14	Loanee	ऋणी, कर्जदार
15	Operational expenses	प्रचालन व्यय
16	Parity price	समता कीमत
17	Repatriation	संप्रत्यावर्तन
18	Reshuffle	फेरबदल
19	Salaried job	वैतनिक कार्य
20	Sandwich course	मध्यवर्ती पाठ्यक्रम

मूसी महारानी की छतरी अलवर